Original Article
ISSN (Online): 2350-0530
ISSN (Print): 2394-3629

International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
December 2024 12(12), 175–183

PHILOSOPHICAL STUDY OF MORAL EDUCATION AND VALUE EDUCATION IN THE FIELD OF EDUCATION

शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा का एक दार्शनिक अध्ययन

Dr. Piyush Kumar Shukla [1]

[1] Assistant Professor, Department of Education, Teacher Training College, Industrial Area, Gaya, Bihar, India

Received 25 October 2024
Accepted 27 November 2024
Published 31 December 2024

Corresponding Author
Dr. Piyush Kumar Shukla,
piyushshkl916@gmail.com

DOI
10.29121/granthaalayah.v12.i12.2024.6303

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: In the present times when the tendencies of materialism, competition, moral degradation and self-centredness are intensifying in the society, the importance of moral education and value education in the field of education has increased more than ever. Not only from the educational point of view, but also from the philosophical point of view, it has become extremely necessary that we should not give only knowledge or technical skills to the future generation, but also provide them the art of living, the conscience of right and wrong, and the sense of social and spiritual responsibility. The aim of education should not be only to give information, but it should become a medium to develop a person as a better citizen, sensitive human being and balanced personality. This is the point where the philosophical basis of moral education and value education becomes extremely important.

Hindi: वर्तमान समय में जब समाज में भौतिकवाद, प्रतिस्पर्धा, नैतिक पतन, और आत्मकेन्द्रितता की प्रवृत्तियाँ तीव्र होती जा रही हैं, तब शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। यह केवल एक शैक्षणिक आवश्यकता नहीं, बल्कि एक दार्शनिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत आवश्यक बन गया है कि हम भावी पीढ़ियों को केवल ज्ञान या तकनीकी दक्षता ही न दें, बल्कि उन्हें जीवन जीने की कला, सही और गलत का विवेक, तथा सामाजिक और आत्मिक उत्तरदायित्व का बोध भी दें। शिक्षा का उद्देश्य मात्र जानकारी देना नहीं होना चाहिए, बल्कि यह मनुष्य को एक बेहतर नागरिक, संवेदनशील मानव, तथा संतुलित व्यक्तित्व के रूप में विकसित करने का साधन बननी चाहिए। यही वह बिंदु है जहाँ नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा का दार्शनिक आधार अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

Keywords: Education, Moral Education, Value Education, Tendencies of Self-Centeredness, Social and Spiritual Responsibility, Philosophical Basis, शिक्षा, नैतिक शिक्षा, मूल्य शिक्षा, आत्मकेन्द्रितता की प्रवृत्तियाँ, सामाजिक और आत्मिक उत्तरदायित्व, दार्शनिक आधार

1. प्रस्तावना

नैतिक शिक्षा का तात्पर्य उन सिद्धांतों, आचरणों और आदर्शों से है जो व्यक्ति को नैतिक निर्णय लेने में सहायता प्रदान करते हैं। यह शिक्षा मनुष्य को यह सिखाती है कि सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति, करुणा, दया, सहनशीलता और कर्तव्य जैसे मूल्यों को जीवन में किस प्रकार आत्मसात किया जाए। नैतिकता समाज में सह-अस्तित्व की भावना को बल देती है और सामाजिक संरचना को सुदृढ़ बनाती है। दार्शनिक दृष्टिकोण से देखें तो नैतिक शिक्षा व्यक्ति को आत्म-निरीक्षण की ओर प्रेरित करती है, जिससे वह अपने

कर्मों और विचारों का मूल्यांकन कर सके। अरस्तू, सुकरात और प्लेटो जैसे दार्शनिकों ने शिक्षा को केवल ज्ञान-प्राप्ति का साधन नहीं माना, बल्कि आत्मा की शुद्धि और आत्मज्ञान प्राप्त करने का मार्ग बताया। सुकरात ने कहा था, "अपनी आत्मा की देखभाल सबसे महत्वपूर्ण कार्य है", और यह देखभाल नैतिक शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

वहीं, मूल्य शिक्षा (Value Education) एक व्यापक अवधारणा है जो सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और वैश्विक मूल्यों को समाहित करती है। इसमें न केवल नैतिक मूल्य बल्कि आध्यात्मिक, मानवतावादी, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय और लोकतांत्रिक मूल्य भी सम्मिलित होते हैं। यह शिक्षा छात्रों में ऐसी चेतना का विकास करती है जिससे वे विभिन्न जीवन परिस्थितियों में सटीक निर्णय ले सकें और एक उत्तरदायी नागरिक बन सकें। मूल्य शिक्षा का दर्शन यह मानता है कि मानव जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक समृद्धि नहीं, बल्कि आंतरिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व भी है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, टैगोर और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे विचारकों ने शिक्षा के माध्यम से नैतिक और मूल्यात्मक चेतना के विकास पर विशेष बल दिया। गांधीजी का यह मानना था कि "शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य चरित्र निर्माण है।"

दार्शनिक दृष्टिकोण से यदि हम शिक्षा प्रणाली का मूल्यांकन करें तो यह स्पष्ट होता है कि आज की प्रणाली ज्ञान और कौशल के विकास पर तो बल देती है, परन्तु नैतिक और मूल्य पक्ष की उपेक्षा करती है। इसके कारण शिक्षा व्यावसायिक तो हो रही है, परन्तु मानवीयता से शून्य होती जा रही है। यही कारण है कि समाज में भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, हिंसा, अनैतिक व्यवहार और संवेदनहीनता जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। जब शिक्षा में नैतिकता और मूल्यों की उपेक्षा की जाती है, तो वह व्यक्ति को केवल एक कुशल मशीन बना देती है, न कि एक जागरूक नागरिक या संवेदनशील मानव। इसी संदर्भ में दार्शनिक शिक्षा शास्त्र यह आग्रह करता है कि शिक्षा को केवल विषयवस्तु आधारित न रखकर, जीवनमूल्य आधारित बनाना चाहिए।

नैतिक एवं मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता को सुनिश्चित करने के लिए उसे प्रारंभिक स्तर से ही शिक्षा प्रणाली में समाहित किया जाना चाहिए। विद्यालयों में शिक्षकों की भूमिका केवल सूचना प्रदाता की नहीं, बल्कि आदर्श प्रस्तुतकर्ता की होनी चाहिए। शिक्षक यदि अपने आचरण और व्यवहार में नैतिक मूल्यों का प्रदर्शन करें, तो छात्र सहज रूप से उन्हें आत्मसात कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रमों में ऐसी कहानियाँ, जीवनी, नाटक, चर्चाएँ, और अनुभवात्मक शिक्षण की विधियाँ सम्मिलित होनी चाहिए जो छात्रों को आत्मानुभूति और आत्मविश्लेषण की ओर उन्मुख करें। उदाहरणस्वरूप, रामायण, महाभारत, जैन और बौद्ध साहित्य, उपनिषदों, भगवद्गीता, और आधुनिक विचारकों की शिक्षाएँ मूल्य शिक्षा का सशक्त माध्यम बन सकती हैं।

आज की वैश्विक दुनिया में मूल्य शिक्षा और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है, जहाँ विविध संस्कृतियाँ, धर्म, विचार और जीवनशैली एक-दूसरे के संपर्क में हैं। ऐसे में सहिष्णुता, सहयोग, शांति और वैश्विक नागरिकता जैसे मूल्य आवश्यक हो जाते हैं। यूनेस्को ने भी शिक्षा को 'सीखना जीने के लिए' (Learning to Live Together) की अवधारणा के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें मूल्य शिक्षा का केंद्रस्थान है। इस दिशा में दार्शनिकों का यह विचार भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षा को 'किया जाना' (Doing) और 'होना' (Being) के स्तर तक ले जाना होगा, ताकि छात्र केवल ज्ञान न लें, बल्कि स्वयं नैतिक जीवन जीने लगें।

नैतिक एवं मूल्य शिक्षा को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने के लिए समाज, सरकार और परिवार की त्रैतीय भूमिका भी आवश्यक है। परिवार एक बालक का प्रथम विद्यालय होता है, और माता-पिता उसके प्रथम शिक्षक। यदि परिवार में मूल्य आधारित वातावरण होगा, तो विद्यालय में दी जा रही शिक्षा और भी प्रभावी होगी। वहीं सरकार को नीति-निर्माण के स्तर पर नैतिक शिक्षा को आवश्यक बनाने, शिक्षकों को प्रशिक्षित करने, और विद्यालयों में नैतिक परियोजनाओं को लागू करने के लिए सशक्त कदम उठाने चाहिए। सामाजिक संगठनों और धर्म-आधारित संस्थाओं को भी इस दिशा में सक्रिय योगदान देना चाहिए।

2. नैतिक शिक्षा की अवधारणा और उसका महत्व

नैतिक शिक्षा की अवधारणा मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है, जो व्यक्ति के चरित्र, व्यवहार और निर्णय-क्षमता को सही दिशा प्रदान करती है। यह शिक्षा व्यक्ति को यह सिखाती है कि जीवन में क्या उचित है और क्या अनुचित, क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। नैतिकता

केवल नियमों और आदेशों का पालन नहीं, बल्कि यह आत्म-चेतना, विवेक और आंतरिक उत्तरदायित्व की भावना से जुड़ी होती है। नैतिक शिक्षा बच्चों, किशोरों और युवाओं में सद्गुणों जैसे ईमानदारी, सहानुभूति, सहनशीलता, सत्यनिष्ठा, विनम्रता और करुणा के विकास पर बल देती है, जो उन्हें एक बेहतर इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में अग्रसर करती है।

प्राचीन भारतीय परंपरा में नैतिक शिक्षा को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। गुरुकुल प्रणाली में केवल वेद, शास्त्र या विज्ञान नहीं पढ़ाए जाते थे, बल्कि शिष्य के आचरण, अनुशासन, और जीवन-मूल्यों पर भी विशेष बल दिया जाता था। 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् वह विद्या जो हमें बंधनों से मुक्त करे – यही विचार नैतिक शिक्षा का सार है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और डॉ. राधाकृष्णन जैसे महान विचारकों ने शिक्षा को चरित्र निर्माण का माध्यम माना है, न कि केवल रोजगार प्राप्ति का उपकरण।

आज के समय में नैतिक शिक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। विज्ञान और तकनीक ने जहाँ मानव को सुविधाएँ दी हैं, वहीं नैतिक मूल्यों का पतन भी देखा गया है। शिक्षा केवल सूचना प्रदान कर रही है, लेकिन नैतिक बोध और आत्मानुशासन का विकास नहीं हो पा रहा है। परिणामस्वरूप समाज में असहिष्णुता, हिंसा, भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता, और संवेदनहीनता जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऐसे में नैतिक शिक्षा व्यक्ति को आत्म-निरीक्षण की क्षमता देती है, जिससे वह अपने विचारों और कर्मों का मूल्यांकन कर सके और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझ सके।

विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में नैतिक शिक्षा का समावेश आवश्यक है। यह केवल पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि शिक्षकों के आचरण, विद्यालयी वातावरण, और सह-पाठ्य गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को नैतिक मूल्यों का व्यवहारिक अनुभव कराना चाहिए। एक शिक्षक यदि स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करता है तो उसका प्रभाव छात्रों पर गहरा होता है। परिवार और समाज की भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योंकि नैतिकता का बीजारोपण घर से ही होता है।

नैतिक शिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की कुंजी भी है। एक नैतिक व्यक्ति न केवल अपने लिए, बल्कि समाज के लिए भी हितकारी होता है। इसलिए आज की शिक्षा व्यवस्था को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह केवल ज्ञान नहीं, बल्कि विवेक और मूल्य भी प्रदान करे। नैतिक शिक्षा ही वह आधार है जिस पर एक समतामूलक, न्यायसंगत और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना संभव है।

3. मूल्य शिक्षा का स्वरूपदर्शन और व्यावहारिकता

मूल्य शिक्षा (Value Education) शिक्षा का वह आयाम है जो व्यक्ति के अंतर्मन को जागरूक बनाता है, उसे आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराता है तथा उसके जीवन में नैतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों का विकास करता है। यह केवल एक शैक्षणिक अवधारणा नहीं है, बल्कि एक दार्शनिक और व्यावहारिक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य एक संपूर्ण और संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करना है। मूल्य शिक्षा का स्वरूप अत्यंत व्यापक, गहन और बहुआयामी होता है, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास से जुड़ा हुआ है। यह शिक्षा व्यक्ति को केवल जानकारी नहीं देती, बल्कि उसे विवेकशील, आत्मचिंतनशील, उत्तरदायी और संवेदनशील बनाती है। इस प्रकार मूल्य शिक्षा का दर्शन जीवन के मूल उद्देश्यों, मानवीय चेतना और सामाजिक सामंजस्य से संबंधित है, जबकि उसकी व्यावहारिकता दैनिक जीवन के व्यवहारों, संबंधों और निर्णयों में दिखाई देती है।

दर्शनशास्त्र के संदर्भ में मूल्य शिक्षा का अर्थ है – उन सार्वभौमिक सिद्धांतों का शिक्षण जो मनुष्य को नैतिक रूप से सही, न्यायपूर्ण और सत्यनिष्ठ निर्णय लेने में सहायता करते हैं। ये मूल्य समय और स्थान की सीमाओं से परे होते हैं, जैसे कि सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, सहयोग, सहिष्णुता, ईमानदारी, कर्तव्य, अनुशासन, और आत्मसम्मान। भारतीय दर्शन में इन मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, जैन और बौद्ध ग्रंथों में बार-बार बताया गया है कि मनुष्य का उद्देश्य केवल भौतिक उपलब्धियाँ नहीं, बल्कि आत्मोन्नति और लोकमंगल भी है। गीता का कर्मयोग, बौद्ध धर्म का मध्यम मार्ग, और उपनिषदों की आत्मविद्या – ये सभी मूल्य शिक्षा के दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं। पश्चिमी दर्शन में भी सुकरात, प्लेटो, कांट, और जॉन डीवी जैसे दार्शनिकों ने नैतिकता और मूल्यों को शिक्षा की आत्मा माना है। कांट ने

तो यहां तक कहा कि "मनुष्य को साध्य की तरह देखो, साधन की तरह नहीं", जो मूल्य शिक्षा के मानवीय दृष्टिकोण को उजागर करता है।

मूल्य शिक्षा का दार्शनिक स्वरूप हमें यह सिखाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बाहरी दुनिया को जानना नहीं, बल्कि अपने 'स्व' को जानना, आत्मबोध प्राप्त करना और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझना है। यह शिक्षा आत्मा और विवेक को विकसित करती है ताकि व्यक्ति भीतर से सशक्त हो सके और बाहरी दुनिया में संतुलन बना सके। इसके विपरीत, जब शिक्षा केवल तकनीकी और जानकारी तक सीमित रह जाती है, तो वह व्यक्ति को एक मशीन तो बना सकती है, परंतु मानव नहीं। यही कारण है कि आज जब समाज में भौतिक प्रगति के साथ-साथ नैतिक पतन भी देखने को मिलता है, तो मूल्य शिक्षा की आवश्यकता और भी प्रबल हो जाती है। दार्शनिक दृष्टिकोण से यह शिक्षा जीवन के उद्देश्य, जीवन की दिशा और जीवन की गुणवत्ता को निर्धारित करने का आधार बनती है।

अब यदि हम मूल्य शिक्षा की व्यावहारिकता की बात करें, तो यह देखा जाता है कि मूल्य शिक्षा को कैसे बच्चों, युवाओं और समाज के प्रत्येक वर्ग में लागू किया जाए ताकि उसका प्रभाव वास्तविक जीवन में परिलक्षित हो। इसके लिए सबसे पहले शिक्षा प्रणाली में मूल्यों का समावेश आवश्यक है। विद्यालयी पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को केवल एक विषय की तरह नहीं, बल्कि एक दृष्टिकोण की तरह अपनाना होगा, जो प्रत्येक विषय, गतिविधि और संवाद में प्रकट हो। एक विज्ञान शिक्षक भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ सत्यनिष्ठा और तर्कशीलता का मूल्य सिखा सकता है, और एक इतिहास शिक्षक देशभक्ति, न्याय और समाज के प्रति कर्तव्य का बोध करा सकता है। शिक्षकों की भूमिका यहाँ अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे न केवल पाठ पढ़ाते हैं, बल्कि जीवन जीने का तरीका भी सिखाते हैं। उनका आचरण, भाषा, व्यवहार और निर्णय छात्रों को अप्रत्यक्ष रूप से गहरे प्रभाव में लेते हैं।

व्यावहारिक मूल्य शिक्षा का दूसरा माध्यम सह-पाठ्य गतिविधियाँ हैं, जैसे कि सामूहिक कार्य, सेवाकार्य, योग, ध्यान, नैतिक नाट्य, समूह चर्चाएँ, कहानी वाचन, और परियोजनाएँ। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्र केवल सुनते या पढ़ते नहीं, बल्कि मूल्यों को अनुभव करते हैं, उन पर चिंतन करते हैं और उन्हें अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। अनुभवात्मक शिक्षा, परियोजना-आधारित शिक्षण और सेवा-शिक्षण (service learning) जैसी शैक्षिक विधियाँ आज के समय में मूल्य शिक्षा को व्यवहार में लाने का प्रभावशाली माध्यम बन रही हैं।

परिवार और समाज का योगदान भी मूल्य शिक्षा की व्यावहारिकता में अनिवार्य है। बच्चे सबसे पहले मूल्य अपने परिवार से सीखते हैं। माता-पिता का आचरण, आपसी संबंध, संवाद का तरीका, और जीवन के प्रति दृष्टिकोण बच्चों पर गहरा प्रभाव डालता है। यदि घर में ईमानदारी, सहयोग, अनुशासन और करुणा का वातावरण हो, तो विद्यालय में दी जा रही शिक्षा और भी प्रभावशाली बनती है। समाज के विभिन्न घटक जैसे धार्मिक संस्थाएँ, सामाजिक संगठन, मीडिया और जनप्रतिनिधि – सभी को इस दिशा में अपनी भूमिका निभानी चाहिए। मीडिया विशेषकर बच्चों और युवाओं के मानसिक विकास को प्रभावित करता है, इसलिए इसमें मूल्य आधारित कार्यक्रमों का समावेश होना चाहिए।

आज के वैश्वीकरण और डिजिटल युग में मूल्य शिक्षा की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। तकनीकी विकास ने जहाँ ज्ञान को सुलभ बनाया है, वहीं सूचना का दुरुपयोग, सोशल मीडिया की नकारात्मकता, उपभोक्तावाद और आत्मकेन्द्रितता जैसी समस्याएँ उत्पन्न की हैं। ऐसे में आवश्यक है कि व्यक्ति में आत्मानुशासन, विवेक, समावेशिता और संवेदनशीलता जैसे मूल्य विकसित हों, ताकि वह तकनीक का प्रयोग मानवता के हित में कर सके। मूल्य शिक्षा बच्चों को यह भी सिखाती है कि प्रतियोगिता के साथ सहयोग, स्वतंत्रता के साथ उत्तरदायित्व, और अधिकारों के साथ कर्तव्यों का संतुलन कैसे रखा जाए।

सरकारी स्तर पर भी मूल्य शिक्षा को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। नई शिक्षा नीति 2020 में भी यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा पास करना नहीं, बल्कि 'अच्छा मनुष्य' बनाना है। नीति में जीवन-कौशल, नैतिकता, पर्यावरणीय चेतना, और संवैधानिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने की बात कही गई है। अब आवश्यकता इस बात की है कि इन नीतियों को धरातल पर प्रभावी रूप से लागू किया जाए और मूल्य शिक्षा को संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में केंद्रीय स्थान दिया जाए।

मूल्य शिक्षा का स्वरूप दार्शनिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक है, बल्कि समाज के नैतिक स्तर को भी ऊँचा उठाती है। एक मूल्यनिष्ठ

व्यक्ति समाज में शांति, सह-अस्तित्व और न्याय को बढ़ावा देता है, जबकि मूल्यहीनता अनेक सामाजिक बुराइयों को जन्म देती है। आज जब पूरी दुनिया नैतिक संकट से गुजर रही है, तब मूल्य शिक्षा ही वह आशा की किरण है जो आने वाली पीढ़ियों को एक बेहतर मनुष्य और बेहतर नागरिक बनाने की दिशा में अग्रसर कर सकती है। अतः शिक्षा का उद्देश्य केवल 'जानना' नहीं, बल्कि 'बनना' होना चाहिए – और यही मूल्य शिक्षा का वास्तविक दर्शन और व्यावहारिकता है।

4. प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्व की सबसे पुरानी और समृद्ध शिक्षण परंपराओं में से एक मानी जाती है, जिसका मूल उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान की प्राप्ति न होकर, व्यक्ति के सम्पूर्ण चारित्रिक, आध्यात्मिक, और नैतिक विकास पर आधारित था। इस शिक्षा प्रणाली का आधार भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति और जीवन के गूढ़ मूल्यों पर टिका हुआ था। वैदिक काल से लेकर उत्तरवैदिक, बौद्ध, जैन और गुप्तकालीन शिक्षा परंपराओं में नैतिक शिक्षा (Moral Education) और मूल्य शिक्षा (Value Education) को अत्यधिक महत्व दिया गया। यह शिक्षा न केवल जीवन की दिशा तय करती थी, बल्कि व्यक्ति को आत्मबोध, समाज बोध और लोकमंगल की भावना से जोड़ती थी। प्राचीन भारत की गुरुकुल प्रणाली, आश्रम पद्धति, धार्मिक शिक्षा केंद्र, और विश्वविद्यालयों जैसे नालंदा, तक्षशिला, वल्लभी और विक्रमशिला में जिस प्रकार का शिक्षण होता था, वह आज की शिक्षा प्रणाली की तुलना में कहीं अधिक नैतिक और मूल्यनिष्ठ था।

गुरुकुल प्रणाली प्राचीन भारतीय शिक्षा का प्रमुख स्वरूप था। इस प्रणाली में विद्यार्थी अपने गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करता था। शिक्षा का उद्देश्य केवल शास्त्रों का अध्ययन नहीं, बल्कि गुरु के सेवा भाव, अनुशासन, तप, संयम, कर्तव्यबोध, और आत्मसंयम जैसे गुणों को अपने जीवन में आत्मसात करना होता था। यहां विद्यार्थी को 'सत्यं वद', 'धर्मं चर' जैसी शिक्षाओं के माध्यम से सत्य, अहिंसा, नम्रता, त्याग, ब्रह्मचर्य, और सहनशीलता के मूल्यों को व्यवहार में उतारने पर बल दिया जाता था। विद्यार्थियों को यज्ञ, हवन, ध्यान, ब्रह्ममुहूर्त जागरण, शुद्ध भोजन, विनम्रता, आत्मनियंत्रण, और समाज सेवा के माध्यम से जीवन को आध्यात्मिक और नैतिक दिशा में विकसित करने की प्रेरणा दी जाती थी। इस प्रकार, शिक्षा एक नैतिक अनुशासन का पर्याय बन चुकी थी।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों में नैतिकता को जीवन का अनिवार्य अंग माना गया है। *मनुस्मृति*, *महाभारत*, *रामायण*, *उपनिषद*, और *भगवद्गीता* जैसे ग्रंथों में नैतिक मूल्यों और चारित्रिक शिक्षा का विशद वर्णन मिलता है। *महाभारत* में धर्म, सत्य, कर्तव्य और त्याग की परीक्षा कठिन परिस्थितियों में कैसे होती है – इसका गूढ़ वर्णन मिलता है। *रामायण* में राम का आदर्श चरित्र, उनकी सत्यनिष्ठा, पिता की आज्ञा का पालन, वचनबद्धता और समाज के प्रति उत्तरदायित्व आज भी नैतिक शिक्षा का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। *उपनिषदों* में आत्मबोध, ब्रह्मज्ञान, और संयम का महत्व बताया गया है, जो आत्मविकास की दिशा में आवश्यक है। *भगवद्गीता* में अर्जुन को कृष्ण द्वारा दिए गए उपदेशों में कर्मयोग, निस्वार्थता, कर्तव्यपालन, और आत्मसंयम की शिक्षा मूल्य शिक्षा का सर्वोच्च रूप है। ये सभी ग्रंथ केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि नैतिक और मूल्यात्मक शिक्षा के सशक्त स्रोत हैं।

प्राचीन भारत की शिक्षा में 'चार पुरुषार्थों' – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – को भी शिक्षण का आधार माना गया था। इनमें 'धर्म' को जीवन का नैतिक आधार बताया गया, जिससे अर्थ और काम को संतुलित रूप से साधा जा सके और अंततः मोक्ष की प्राप्ति हो। धर्म का अर्थ केवल पूजा-पाठ नहीं था, बल्कि वह संपूर्ण नैतिक जीवन पद्धति थी – जिसमें सत्य, अहिंसा, करुणा, क्षमा, और दया जैसे मूल्य जीवन के हर निर्णय में मार्गदर्शन करते थे। इस प्रकार नैतिक और मूल्य शिक्षा व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अंतर्निहित थी।

शिक्षा के क्षेत्र में गुरु का स्थान सर्वोपरि था, और गुरु को ईश्वर के समान माना जाता था – 'गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः।' गुरु स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करता था और अपने आचरण से शिष्य को नैतिकता का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता था। शिष्य का भी कर्तव्य होता था कि वह गुरु के प्रति पूर्ण

श्रद्धा और विनम्रता रखे तथा उनके निर्देशों का पालन कर अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाए। यह संबंध केवल ज्ञान के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं था, बल्कि एक आत्मिक बंधन था जो आज की शिक्षक-छात्र संबंध की व्यवसायिकता से कहीं अधिक भावनात्मक और मूल्याधारित था।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा का दायरा केवल व्यक्तिगत चारित्रिक विकास तक सीमित नहीं था, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व के रूप में भी व्यक्त होता था। शिक्षा का उद्देश्य 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे विचारों को आत्मसात कराना था। समाज के प्रति सेवा, वृद्धों का सम्मान, महिला सम्मान, पर्यावरण संरक्षण, और पशु-पक्षियों के प्रति करुणा जैसे मूल्य शिक्षा के माध्यम से सहज रूप से व्यक्तियों में रोपित किए जाते थे। बौद्ध और जैन शिक्षा परंपराएँ भी करुणा, अपरिग्रह, अहिंसा और सत्य जैसे मूल्यों पर आधारित थीं और इनका शिक्षण अत्यंत अनुशासित तथा जीवनमूल्य-प्रधान होता था।

प्राचीन विश्वविद्यालयों जैसे *नालंदा*, *तक्षशिला*, *विक्रमशिला*, और *वर्द्धमान* शिक्षा केंद्रों में धर्म, तर्क, चिकित्सा, व्याकरण, खगोल, और दर्शन के साथ-साथ नैतिक शिक्षा को एक अनिवार्य अंग के रूप में शामिल किया गया था। ये संस्थान केवल ज्ञान-केन्द्र नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और वैश्विक नैतिकता के पोषक केंद्र भी थे। वहाँ शिक्षा के साथ संयम, शील, और सेवा जैसे नैतिक गुणों का भी नियमित अभ्यास होता था। विद्यार्थियों को केवल विद्वान नहीं, बल्कि समाजोपयोगी, सहिष्णु, और विवेकशील नागरिक बनाने का प्रयास किया जाता था।

इस संपूर्ण पृष्ठभूमि को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक और मूल्य शिक्षा केवल एक विषय नहीं, बल्कि सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का मूलभूत तत्व थी। आज जब आधुनिक शिक्षा प्रणाली भौतिक सफलता, प्रतियोगिता और केवल रोजगारोन्मुख दृष्टिकोण पर केन्द्रित हो गई है, तब यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम प्राचीन शिक्षा प्रणाली की उस नैतिक नींव को पुनः स्मरण करें, जो शिक्षा को मानवता के हित में एक साधन के रूप में प्रस्तुत करती थी। आज के समय में जब युवा पीढ़ी दिशाहीनता, मूल्यहीनता और आचरण संकट से जूझ रही है, तब प्राचीन भारत की नैतिक शिक्षा परंपरा हमें एक आदर्श पथ दिखा सकती है।

5. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है, क्योंकि आज का समाज तकनीकी, आर्थिक और वैज्ञानिक दृष्टि से जितनी तीव्र गति से प्रगति कर रहा है, उतनी ही तेजी से नैतिक मूल्यों, संवेदनशीलता, करुणा, और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का ह्रास भी हो रहा है। शिक्षा, जो कभी चरित्र निर्माण, नैतिक दिशा और मूल्य-सम्पन्न जीवन का माध्यम मानी जाती थी, अब प्रायः केवल नौकरी पाने और प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ने का साधन बन गई है। इस बदलते परिवेश में यह अत्यावश्यक हो गया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और मूल्यों का समावेश केवल एक वैकल्पिक पहलू न होकर, उसके केंद्र में हो। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य न केवल कुशल, जानकारीयुक्त और तकनीकी रूप से दक्ष व्यक्ति का निर्माण करना होना चाहिए, बल्कि एक ऐसा नागरिक बनाना भी होना चाहिए जो समाज, पर्यावरण, राष्ट्र और मानवता के प्रति जिम्मेदार हो।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जिस प्रकार से विद्यार्थियों पर अकादमिक दबाव, प्रतिस्पर्धात्मक मानसिकता और भौतिक उपलब्धियों की होड़ थोप दी गई है, उसमें जीवन-मूल्यों की शिक्षा कहीं पीछे छूट गई है। इससे छात्र केवल अंकों, रैंक और डिग्रियों को महत्व देने लगे हैं, जबकि करुणा, सहयोग, आत्मानुशासन, ईमानदारी, निस्वार्थ सेवा, और सहिष्णुता जैसे नैतिक मूल्यों का उनके व्यक्तित्व में अभाव दिखाई देता है। यही कारण है कि समाज में बढ़ती हिंसा, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता, मानसिक अवसाद, आत्महत्या की प्रवृत्ति और नैतिक संकट एक चिंता का विषय बन गए हैं। इन सबका समाधान शिक्षा के उस रूप में निहित है जो व्यक्ति को भीतर से सशक्त बनाए, न कि केवल बाहर से समर्थ।

नैतिक शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति के भीतर नैतिक निर्णय लेने की क्षमता, विवेक, आत्मबोध, कर्तव्यपरायणता और सही-गलत के भेद को समझने की चेतना का विकास करना है। यह शिक्षा विद्यार्थियों में सदाचार, जिम्मेदारी, और सामाजिक समरसता की भावना को विकसित करती है। मूल्य शिक्षा इससे भी व्यापक है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और वैश्विक मूल्यों जैसे – पर्यावरणीय चेतना, लैंगिक

समानता, मानवाधिकार, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, शांति, सह-अस्तित्व और सेवा-भावना – को जीवन का हिस्सा बनाने पर बल देती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली को इन दोनों ही आयामों को अपने पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों और शैक्षिक वातावरण में समाविष्ट करना आवश्यक है।

भारत में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF – National Curriculum Framework) तथा नई शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा को प्राथमिकता दिए जाने की बात कही गई है। नई शिक्षा नीति के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य 'नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक, और बौद्धिक' सभी पहलुओं का संतुलित विकास होना चाहिए। नीति में यह भी सुझाव दिया गया है कि छात्रों में जीवन-कौशल, संवेदनशीलता, सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव, और नागरिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों को विद्यालयी शिक्षा में ही विकसित किया जाना चाहिए। यह एक सकारात्मक पहल है, लेकिन जब तक इन उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप से लागू नहीं किया जाता, तब तक शिक्षा केवल कागजी योजना बनी रहेगी।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालयों और महाविद्यालयों में ऐसे पाठ्यक्रम विकसित किए जाएँ जिनमें नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा को एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि समग्र शिक्षण प्रक्रिया के अंग के रूप में देखा जाए। शिक्षकों को भी इस दिशा में प्रशिक्षित किया जाए कि वे अपने व्यवहार, शिक्षण शैली, और विद्यार्थियों के साथ संवाद में मूल्यनिष्ठ और नैतिक दृष्टिकोण अपनाएँ। एक शिक्षक केवल विषय का ज्ञाता नहीं, बल्कि एक आदर्श व्यक्तित्व होना चाहिए, जिससे छात्र प्रेरणा ले सकें। स्कूलों में नियमित रूप से प्रार्थना सभाएँ, नैतिक कथाओं का वाचन, सामाजिक सेवा, समूह चर्चा, नाट्य प्रस्तुति, और अनुभवात्मक शिक्षण की विधियाँ अपनाई जानी चाहिए।

आधुनिक तकनीकी शिक्षा, डिजिटल लर्निंग, और स्मार्ट क्लास जैसी सुविधाएँ जहाँ छात्रों में बौद्धिक तीव्रता को बढ़ा रही हैं, वहीं यह देखा गया है कि इनमें सहानुभूति, आत्मसंयम और अनुशासन का भाव घटता जा रहा है। इसके लिए डिजिटल माध्यमों में भी नैतिक और मूल्य शिक्षा को समाहित करना आवश्यक हो गया है। उदाहरणस्वरूप, ई-कंटेंट में प्रेरक कहानियाँ, स्वानुभूति से भरे दृश्य, और सामाजिक मुद्दों पर आधारित वीडियो/चर्चा जैसे तत्व जोड़े जा सकते हैं, जिससे तकनीक मानवीयता का माध्यम बन सके।

परिवार और समाज की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली की सफलता केवल शिक्षण संस्थानों पर नहीं, बल्कि उस सामाजिक परिवेश पर भी निर्भर करती है जिसमें छात्र पलता-बढ़ता है। यदि परिवार में नैतिकता, अनुशासन, संयम और संवेदनशीलता का वातावरण होगा, तो विद्यालय में दी जा रही मूल्य शिक्षा अधिक प्रभावी होगी। मीडिया, सोशल मीडिया और मनोरंजन के साधनों को भी इस दिशा में उत्तरदायी बनाना होगा, क्योंकि आधुनिक युवा इन्हीं माध्यमों से सबसे अधिक प्रभावित होता है। यदि इन प्लेटफार्मों पर मूल्य आधारित कार्यक्रम, नैतिक निर्णयों की कहानियाँ और प्रेरक चरित्रों को स्थान दिया जाए, तो सामाजिक चेतना में सुधार संभव है।

विश्व स्तर पर भी यह देखा गया है कि जिन देशों की शिक्षा प्रणाली ने नैतिकता और मूल्यों को प्राथमिकता दी है, वहाँ सामाजिक अपराध, मानसिक तनाव, और भ्रष्टाचार की दर अपेक्षाकृत कम है। फिनलैंड, जापान और कनाडा जैसे देशों की शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थियों को सहयोग, आत्मावलोकन, नागरिक कर्तव्यों और आत्म-संयम की शिक्षा दी जाती है, जिससे वे केवल अच्छे छात्र नहीं, बल्कि अच्छे मनुष्य भी बनते हैं। भारत को भी अपनी पारंपरिक नैतिक शिक्षा की समृद्ध विरासत को आधुनिक संदर्भों में पुनः जीवंत करना चाहिए। भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति – जैसे कि गुरुकुल प्रणाली, वेदों, उपनिषदों, गीता, जैन-बौद्ध साहित्य – नैतिक मूल्यों की अनमोल धरोहर हैं, जिन्हें आज की पीढ़ी को आधुनिक विधाओं के माध्यम से सिखाया जा सकता है।

6. स्वामी विवेकानंद, गांधीजी और राधाकृष्णन के विचारों में मूल्य शिक्षा

स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय शिक्षा और जीवन-मूल्यों के ऐसे तीन महान विचारक हैं, जिन्होंने न केवल शिक्षा की परिभाषा को आध्यात्मिक और नैतिक आधार प्रदान किया, बल्कि मूल्य शिक्षा को जीवन के केन्द्र में स्थापित किया। इन तीनों महापुरुषों ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन या रोज़गार प्राप्त करना नहीं है, बल्कि आत्मविकास, चरित्र

निर्माण, और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास है। उनके विचारों में मूल्य शिक्षा का स्वरूप अत्यंत गहन, सार्वभौमिक और व्यवहारिक था।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "शिक्षा वह है जिससे मनुष्य का चरित्र बनता है, मन मजबूत होते हैं, बुद्धि का विकास होता है और वह आत्मनिर्भर बनता है।" विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा को आत्मा के भीतर के दिव्य गुणों को जागृत करने का साधन होना चाहिए। वे नैतिक शिक्षा को आत्म-ज्ञान, आत्मसंयम, सेवा, परोपकार, और राष्ट्रप्रेम से जोड़ते थे। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे सत्य, ब्रह्मचर्य, सेवा, और साहस जैसे मूल्यों को जीवन में अपनाएँ और दूसरों के लिए प्रेरणा बनें। उनका दृष्टिकोण था कि शिक्षा ऐसी हो जो "मनुष्य निर्माण" करे, न कि केवल किताबी ज्ञान दे। उन्होंने वेदांत के सिद्धांतों के आधार पर यह बताया कि प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर है, अतः प्रत्येक के प्रति करुणा और सम्मान का भाव होना चाहिए — यही मूल्य शिक्षा का आधार है।

महात्मा गांधी ने शिक्षा के क्षेत्र में "बुनियादी शिक्षा" (Nai Talim) की अवधारणा प्रस्तुत की, जो शारीरिक श्रम, आत्मनिर्भरता और नैतिक मूल्यों के समन्वय पर आधारित थी। गांधीजी का विश्वास था कि शिक्षा जीवन और समाज से कटकर नहीं हो सकती, बल्कि उसे सत्य, अहिंसा, आत्मनियंत्रण, संयम, सेवा, सादगी और सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। उनके अनुसार, "चरित्र निर्माण शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है।" गांधीजी मानते थे कि अगर शिक्षा से नैतिकता, सहनशीलता, और जिम्मेदारी नहीं आती, तो वह अधूरी है। वे यह भी कहते थे कि एक अच्छा नागरिक बनने के लिए जरूरी है कि व्यक्ति में नैतिक विवेक हो, जो उसे सही और गलत का भेद बता सके। उन्होंने कहा था, "मेरी दृष्टि में ऐसी शिक्षा व्यर्थ है जो मनुष्य को अपने परिवेश, समाज और देश के प्रति उत्तरदायी न बनाए।"

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, जो स्वयं एक महान दार्शनिक, शिक्षक और भारत के राष्ट्रपति रहे, उन्होंने शिक्षा को जीवन के व्यापक उद्देश्य से जोड़ते हुए कहा था कि "शिक्षा का कार्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि विवेक, करुणा और नैतिकता का विकास करना है।" उनके अनुसार, शिक्षा को केवल बौद्धिक गतिविधि न मानकर, उसे आत्मा की साधना के रूप में देखा जाना चाहिए। वे मूल्य शिक्षा को सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के रूप में परिभाषित करते हैं – जैसे कि समानता, स्वतंत्रता, सहिष्णुता, सहयोग और मानवता। उन्होंने अपने शिक्षण कार्य के दौरान बार-बार यह कहा कि शिक्षक स्वयं मूल्यों के उदाहरण बनें, क्योंकि छात्र वही सीखते हैं जो वे देखते हैं। उनका मानना था कि शिक्षा का मूल कार्य 'सही दृष्टि' देना है – जो केवल पुस्तकीय ज्ञान से नहीं, बल्कि मूल्यबोध से आता है।

7. निष्कर्ष

शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक शिक्षा और मूल्य शिक्षा का समावेश केवल एक शैक्षणिक रणनीति नहीं, बल्कि एक दार्शनिक दृष्टिकोण है जो मानव जीवन के उच्चतम लक्ष्यों – आत्मविकास, सामाजिक उत्तरदायित्व, और वैश्विक शांति – की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। यह शिक्षा मनुष्य को केवल रोजगार नहीं देती, बल्कि उसे जीवन के अर्थ और उद्देश्य से परिचित कराती है। जब शिक्षा मानवीय मूल्यों पर आधारित होगी, तब ही हम एक ऐसे समाज का निर्माण कर सकेंगे जो न्यायपूर्ण, सहिष्णु, समावेशी और शांतिप्रिय हो। अतः आवश-्यकता इस बात की है कि हम शिक्षा को केवल नहीं "जानने की प्रक्रिया", बल्कि के रूप में स्वीकार करें और नैतिक तथा मूल्य शिक्षा को उसके मूल में प्रतिष्ठित "बनने की प्रक्रिया" करें। यही एकमात्र मार्ग है जो शिक्षा को फिर से आत्मा के पुनर्जागरण का माध्यम बना सकताहै।

REFERENCES

Chauhan, B. S. (2015). Moral Education: A Theoretical and Practical Approach. Jaipur: Vikas Publishing House.

Dwivedi, P. D. (2016). Indian Philosophy and Education. Varanasi: Ganga Publications.

Gandhi, M. K. (2007). Hind Swaraj and Other Writings. Ahmedabad: Navjivan Publication Division.

Government of India. (2020). New Education Policy 2020. Ministry of Education, New Delhi: Government of India Publication.

Joshi, M. (2019). The Need for Value-Based Education. Bhopal: Navbharat Publications.

Mishra, R. (2020). Ethics and Values in Education. Lucknow: Bharat Book Depo.

Radhakrishnan, S. (2009). Education and Human Values. New Delhi: Oxford University Press.

Sharma, R. A. (2014). Value Education and Moral Education. Meerut: Surya Publications.

Shukla, S. (2018). Philosophical and Sociological Foundations of Education. New Delhi: Vineet Publications.

Upadhyay, G. P. (2017). Value Education in Indian Pedagogy. Delhi: Radhakrishna Publications.

Verma, N. K. (2021). Relevance of Moral Values in Education. Patna: Gyandeep Publications.

Vivekananda, Swami. (2012). Complete Vivekananda Literature (Volumes 1-9). Kolkata: Advaita Ashrama.